इकाई 9 दृष्टिकोण और परिप्रेक्ष्य

इकाई की रूपरेखा

9.1 प्रस्तावना

लक्ष्य और उद्देष्य

9.2 संघर्ष परिवर्तन क्यों?

9.3 उत्पत्ति और संदर्भ

9.4 संघर्ष परिवर्तन की परिभाषा

9.5 संघर्ष परिवर्तन में संघर्ष की संकल्पना

9.6 संघर्ष परिवर्तन के दृष्टिकोण

9.6.1 पारंपरिक (ग़ैर पष्चिमी) दृष्टिकोण

9.6.2 पष्चिमी दृष्टिकोण

9.6.2.1 संरचनात्मक दृष्टिकोण

9.6.2.1.1 आकस्मिक दृष्टिकोण

9.6.2.1.2 विकासात्मक दृष्टिकोण

9.6.2.1.3 राज्य सुधार दृष्टिकोण

9.6.2.1.4 व्यवस्थित दृष्टिकोण

9.6.2.2 सिविल सोसाइटी दृष्टिकोण

9.6.2.3 संवाद संबंधी दृष्टिकोण

9.6.2.4 कदम–दर–कदम दृष्टिकोण

9.6.2.5 प्रक्रियात्मक दृष्टिकोण

9.6.3 पष्चिमी और ग़ैर पष्चिमी दृष्टिकोणों का मिश्रण

9.6.3.1 अहिंसात्मक दृष्टिकोण

9.7 संघर्ष परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य

9.8 सारांष

9.9 बोध प्रष्न

9.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

9.1 प्रस्तावना

प्रायः सामान्य दिनों में व्यक्ति और समूह के बीच संबंधों में प्राकृतिक रूप से प्रवाह बना रहता है। हालाँकि संघर्ष होने पर यह प्राकृतिक जीवन प्रवाह विच्छिन्न हो जाता है। अतः संघर्ष को संबंधों में रुकावट के तौर पर देखा जाता है। इस तरह संबंध में दोबारा प्रगाढ़ता लाने के लिए इस रुकावट को दूर करना बहुत आवष्यक है। इसके लिए एक–दूसरे की संबद्धता को संरचनात्मक रूप से बदलने या परिवर्तित करने की आवष्यकता होगी। प्रस्तावकों ने "परिवर्तन" के अनेक तरीके अथवा दृष्टिकोण और परिप्रेक्ष्य के सुझाव दिए हैं।

लक्ष्य और उद्देष्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपः

- अन्य लोकप्रिय उक्ति की बजाय संघर्ष परिवर्तन जैसी उक्ति को चुनने के पीछे के कारण और इसका आषय क्या है; इसे समझ सकेंगे;
- संघर्ष परिवर्तन में संघर्ष की अवधारणा और परिवर्तन से इसका संबंध जान सकेंगे;
- संघर्ष परिवर्तन के विभिन्न दृष्टिकोणों प्रस्तावों का अवलोकन कर सकेंगे; और
- संघर्ष परिवर्तन के बहुपरिप्रेक्ष्य की समीक्षा कर सकेंगे।

9.2 संघर्ष परिवर्तन क्यों?

कई वर्षों तक "समाधान" का विचार एक व्यापक, जाना पहचाना और मान्यता प्राप्त शब्द था भले ही कुछ लोग, सिद्धांतवादी और व्यवहारवादी या अभ्यासकर्ता इससे सहमत नहीं थे। ऐसे ही एक अभ्यासकर्ता जॉन पॉल लेडराक संघर्ष समाधान के विचार के संबंध में समाधान के बारे में अपनी पुस्तक *कंफ्लिक्ट रिजोल्यूषन इन 2006* में लिखते हैंः "संभवता यह शब्द बगैर किसी भाषा के किसी संकटकालीन स्थिति या इसके बाह्य अभिव्यक्ति में समाप्ति के प्रति पूर्वाग्रह का अर्थ देता है, संघर्ष के गहरे संरचनात्मक, सांस्कृतिक और दूर तक चलने वाले संबंधों के पहलुओं को पर्याप्त तौर से जाने बग़ैर यह ऐसा करता है।" इससे पहले सन् 2003 में अपनी पुस्तक "*दी लिटिल बुक ऑफ कंफ्लिक्ट ट्रांसफॉर्मेषन*" में लेडराक संघर्ष समाधान शब्द के द्वारा संघर्ष बदलाव या परिवर्तन के बारे में इस प्रकार कहते हैंः

"मैंने सन् 1980 के दषक में संघर्ष परिवर्तन शब्द का प्रयोग करना शुरु किया था, मध्य अमेरिका के व्यापक अनुभव के कारण मुझे भाषा के क्षेत्र में पुनः परीक्षण करने की आवष्यकता महसूस हुई।

मैं जब वहाँ गया था तो मेरा शब्दकोष संघर्ष समाधान और प्रबंधन के सामान्य शब्दों से भरा हुआ था। जल्दी ही मुझे पता लगा कि मेरे लैटिन सहकर्मी मेरी इस अवधारणा के बारे में प्रष्न पूछने लगे हैं बल्कि उन्हें इसे लेकर शंका भी होने लगी थी। जब लोग महत्वपूर्ण और न्यायसंगत मुद्दों पर प्रष्न उठा रहे होते हैं तब समाधान उनके लिए सहयोग के खतरे, संघर्ष से छुटकारा पाने की कोषिष होती है। यह स्पष्ट नहीं था कि समाधान में सिफारिष के लिए कोई जगह बचती है या नहीं। उनके अनुभव के अनुसार गहरे सामाजिक, राजनीतिक समस्याओं के तत्काल समाधान का अर्थ लुभावने शब्दों से है न कि वास्तविकता/असल परिवर्तन से होता है। हिंसात्मक संघर्ष की रचनात्मक प्रतिक्रिया की खोज़ के अपने काम में, मैं इस बात पर सहमत हुआ कि जो कुछ भी कर रहा था उसके लिए रचनात्मक परिवर्तन की आवष्यकता थी।" "संघर्ष समाधान" या "संघर्ष प्रबंधन", से अधिक अच्छा संघर्ष परिवर्तन इसके अर्थ को स्पष्ट करता है।

मार्टिना फिषर और नौरबर्ट रोपर्स ने *बरगौफ हैंडबुक फॉर कंफ्लिक्ट ट्रॉसफॉर्मेषन* नामक पुस्तक परिचय में संघर्ष परिवर्तन को बिना किसी अन्य शब्द की तुलना में सबसे अधिक व्यापक माना है। सन् 2004 में, वे कहते हैं कि इस क्षेत्र के क्रियाकलापों को परिभाषित करने के लिए बहुत से शब्द प्रयोग किए जाते हैं जैसे संघर्ष प्रबंधन, संघर्ष समाधान, संघर्ष परिवर्तन, संघर्ष के निरोध, शांति निर्माण इत्यादि। हम संघर्ष परिवर्तन को सबसे अधिक व्यापक शब्द मानते हैं। इसमें वे सारे क्रियाकलाप आते हैं जो अंतःसमूह संघर्ष को सतत् शांति और सामाजिक न्याय के लक्ष्य के साथ प्रभावित करता है। इसमें संरचना और संकट की स्थिति को रोकने की प्रक्रिया आधारित प्रयास, समूहों को सषक्त करने और

समुदायों के निर्माण की नीति, युद्ध के उत्तरोत्तर स्थितियों में पुनर्निर्माण और सामंजस्य स्थापित करने के प्रयास आदि शामिल हैं।

दी लिटिल बुक ऑफ कंफ्लिक्ट ट्रांसफॉर्मेषन में जोन पॉल आगे लिखते हैं कि संघर्ष समाधान और संघर्ष परिवर्तन में दिषा निर्देषित प्रष्न भिन्न हैं। संघर्ष समाधान में दिषा–निर्देषित प्रष्न यह हैं कि : हम उसे कैसे समाप्त कर सकते हैं जिसे हम समाप्त करना नहीं चाहते?" जबकि संघर्ष परिवर्तन में दिषा–निर्देषित प्रष्न यह है कि जिसे हम चाहते नहीं उसे कैसे समाप्त कर सकते हैं और जो हम नहीं चाहते हैं उसे कैसे बना कर रख सकते हैं? परिवर्तन इस तरह समाधान से दूर चला जाता है।

9.3 उत्पत्ति और संदर्भ

संघर्ष परिवर्तन सन् 1960 के दषक के अंत में और सन् 1970 के दषक के शुरुआती दौर में एक अवधारणा के रूप में, शुरूआती संघर्ष अनुसंधान और विकास अनुसंधान के विचार के रूप में उभरा था। संघर्ष परिवर्तन का विचार शांति अनुसंधानकर्त्ताओं, सेंघास और क्रीपेनड्रॉफ के कार्यों में पहले से ही मौजूद है। सन् 1973 में, उनका मानना था कि संघर्ष राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक गठन से गहरे रूप में जुड़ा है। लघु संघर्ष, राष्ट्रीय संघर्ष से जुड़े थे और बड़े संघर्ष उसके बदले विश्व समाज और अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक गठन की जड़ में हैं। सन् 1971 के शुरुआत में, एडम कर्ले के असंतुलित संबंध से संतुलित संबंध की ओर मुड़े और विषम संबंधों की बात कही। कर्ले के अनुसार परिवर्तन में, विकास एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि इसमें शामिल हैः "संबंधों का पुनर्गठन करना ताकि संघर्ष या अन्य संक्रामक/हस्तांतरण जो पहले से ही प्रस्तुत हैं इसकी अषांति को दूर कर सहयोगात्मक भावना को लाया जाए और इसे पुनःघटित होने से रोका जाए।"

हालाँकि अभी तक एक–दूसरे संघर्ष परिवर्तन व्याख्याता जॉन गैल्टुंग मानते हैं कि संघर्ष सामाजिक ढाँचे में विरोध के संघर्ष के परिणाम स्वरूप पैदा होते हैं। सन् 1996 में वे सोच समझ कर यह निम्न विमर्ष अर्थात असंगत देते हैं कि दो पक्षों के बीच असामंजस्य को इन प्रतिवाद के द्वारा बढ़ाया जा सकता है। इसे प्रकार के किसी एक उपाय से पूरा किया जा सकता हैः समझौते के द्वारा; संघर्ष के ढाँचे को बढ़ाकर या गहरा करके; या अभिकर्ताओं को एक जुट करके या विभाजित करके। इसके अतिरिक्त, शांति निर्माण के ढाँचे में संघर्ष परिवर्तन की अवधारणा का विकास, शीत युद्ध के अंत और सन् 1992 में संयुक्त राष्ट्र महासचिव की रिपोर्ट "एन एजेंडा फॉर पीस" के प्रकाषित होने के बाद इसका विकास हुआ।

9.4 संघर्ष परिवर्तन की परिभाषा

मार्टिना फिषर और नौरबर्ट रोपर्स ने सन् 2004 में लिखी अपनी पुस्तक *बरगौफ हैंडबुक फॉर कंफ्लिक्ट ट्रॉसफॉर्मेषन के इंट्रोक्डषन* (परिचय) में संघर्ष परिवर्तन को एक जन्मजात व्यापक धारणा के रूप में परिभाषित किया है। जो बताता है कि "वैसे कार्य जो किसी खास संघर्ष की जड़ों में बैठे कारणों को बताते हुए संघर्ष के विभिन्न गुणों (कारकों) और कार्यों को नकारात्मक तरीके की बजाय सकारात्मक तरीकों से बदलता है। संघर्ष परिवर्तन की अवधारणा, संघर्ष के संरचनात्मक व्यावहारिक और प्रवृत्तिजन्य पहलुओं पर ज़ोर देता है। यह "षांति की ओर मुड़ने की प्रक्रिया और तरीके दोनों को बताता है।" सन् 2006 में संघर्ष समाधान में जॉन पॉल लेडराक संघर्ष परिवर्तन के निम्नलिखित लाभों के बारे में बताते हैं जैसे किः "परिवर्तित संघर्ष गतिषील और परिप्रेक्ष्य दोनों ही रूपों में व्याख्यात्मक रूप से समृद्ध होते हुए, एक खाँचे में जड़ा हुआ है जो संघर्ष के पावन दृष्टिकोण को बताता है। व्याख्यात्मक

रूप से, "परिवर्तन यह बताता है कि संघर्ष चीजों को व्यापक रूप से रचनात्मक या विनाषात्मक दिषा में परिवर्तित या प्रभावित करता है। संघर्ष परिवर्तन संबंध, संप्रेषण, बोध, मामलों और सामाजिक संगठनों का रूढ़िगत परिवर्तन एक व्यापक सामाजिक ढाँचे से संबंधित है, जो सहयोग के लिए खुले सामाजिक जगहों की ओर घूमता और परिवर्तित होता है। यह संबंधों से अधिक और संघर्ष को व्यवस्थित करने के लिए अहिंसात्मक तरीकों के लिए या जिसे गतिषील और बढ़ते शांतिपूर्ण संबंधों के रूप में जाना जा सकता है।"

सन् 2009 में, *पोस्ट कंफ्लिक्ट पीस बिल्डिंग* पुस्तक में लौरेंट गोयटेस्केल, संघर्ष परिवर्तन को इस तरह से परिभाषित करते हैंः "एक ऐसी प्रक्रिया जिसमें संघर्ष में शामिल विभिन्न पक्ष, संघर्ष के ढाँचागत आयामों में सुधार के लिए दो स्तरों अल्प और दीर्घ अवधि पर सतत रूप से काम करते हैं। अल्पावधि का उद्देष्य हिंसा को पुनर्जीवित होने से रोकना है (या उसकी तीव्रता को कम करना) और दीर्घवधि उद्देष्य को दीर्घावधि शांति बनाए रखना है।"

साररूप में संघर्ष परिवर्तन सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और संबंधों के स्तर पर गहरी जुड़ी समस्याओं में रचनात्मक परिवर्तन की बात करता है। संघर्ष के ढाँचागत, व्यावहारिक और प्रवृत्तिजन्य पहलुओं पर काम करता है। यह सतत शांति को बनाए रखने के लिए दीर्घ अवधि शांति की प्रक्रिया और संरचना भी करता है।

9.5 संघर्ष परिवर्तन में संघर्ष की संकल्पना

संघर्ष परिवर्तन दृष्टिकोण और संघर्ष समाधान प्रबंधन या पुनर्स्थापन प्रबंधन दृष्टिकोण के बीच सबसे बड़ा अंतर उनका संघर्ष के प्रति नजरिया या परिप्रेक्ष्य है। संघर्ष परिवर्तन में संघर्ष के सकारात्मक पक्ष पर ज़ोर दिया जाता है या केन्द्रित रहता है। जॉन पॉल लेडराक के अनुसार, संघर्ष परिवर्तन का अर्थ "रचनात्मक परिवर्तन के लिए प्रयास करना है उससे परे किसी खास समस्या को सुलझाना शामिल है।" ये प्रयास "दो परिवर्तनषील सच्चाइयों पर आधारित हैं। मानव जीवन के संबंधों में संघर्ष सामान्य है और संघर्ष परिवर्तन का उद्देष्य है। यह एक परिवर्तन की स्वचालित मशीन के समान है।" संघर्ष और परिवर्तन दोनों ही सामान्य और गतिषील प्रक्रिया हैं। संघर्ष विभिन्न परिस्थितियों पर प्रभाव डालता है और चार क्षेत्रों में परिवर्तन लाता हैः व्यक्तिगत, संबंध आधारित, ढाँचागत और सांस्कृतिक विकास। गैल्टुंग भी मानते हैं कि संघर्ष के दोनों सकारात्मक और नकारात्मक शांति या जीवन देने वाले या बर्बाद करने वाले वाहक हैं।

इस प्रकार संघर्ष परिवर्तन, संघर्ष को एक अवसर के रूप में देखता है जिसमें अन्याय की जड़ों में गहरे बैठे मामलों को सुलझाया जा सकता है और संघर्ष के नकारात्मक प्रभाव को कम कर और सकारात्मकता को बढ़ाकर रचनात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है।

9.6 संघर्ष परिवर्तन के दृष्टिकोण

बीते सालों में संघर्ष परिवर्तन के क्षेत्र में अनेक प्रकार के दृष्टिकोण विकसित हुए हैं– पष्चिमी दृष्टिकोण, ग़ैर पष्चिमी दृष्टिकोण और वैसे दृष्टिकोण जिसमें पष्चिमी और ग़ैर पष्चिमी दोनों के ही तत्व मिले हुए हैं। यह केवल विशेष प्रकार की स्पष्टतया के उद्देष्य से इन प्रकारों को विकसित किया गया है। वास्तव में, ये सभी दृष्टिकोण पष्चिमी और ग़ैर पष्चिमी विचारों और व्यवहारों से प्रेरित होकर प्रभावित करती है।

9.6.1 पारंपरिक (ग़ैर पष्चिमी) दृष्टिकोण

सन् 2006 में वोल्कर बोएज़ "संघर्ष परिवर्तन के पारंपरिक दृष्टिकोण – क्षमताएँ और सीमाएँ" नामक लेख में संघर्ष परिवर्तन के पारंपरिक दृष्टिकोण की कमज़ोरियों, ताकत, गुणों और संदर्भ के बारे में बताते हैं। बोएज़ का विचार है ग्लोबल (संसार के दक्षिण) के देषों में हिंसात्मक संघर्ष संकर/मिश्रित सामाजिक राजनीतिक लेनदेन है जिसमें आधुनिक समय केन्द्रित के साथ–साथ पूर्व आधुनिक पारंपरिक और बाद के आधुनिक कारण मिले हुए हैं और यह सब अतिव्यापी हैं। हिंसात्मक संघर्ष की स्थिति में राज्य न तो अभिकर्ता होता है और न ही वह निर्देषन के ढाँचे में रूचि रखता है। जबकि पारंपरिक समाजों के संदर्भ में सामान्यता बोएज़ खंडित प्रकार पर ही अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं जो अधिकतर पैतृक सत्तात्मक और कभी–कभी नेतृत्वहीन होता है, (नेतृत्वहीन समाज जिसमें कोई औपचारिक राजनीतिक नेता नहीं होता और जहाँ शक्ति और शासन का कोई सांगठनिक तंत्र नहीं होता है)। इस तरह के विभाजित समाज के प्रकार "राजनीतिक व्यवस्था के व्यवस्थापन और हिंसा को नियंत्रित और नियमित करने की दृष्टि से आधुनिक राज्य से बहुत दूर हैं। हालाँकि वे "अव्यवस्थित" नहीं हैं पर उनके पास हिंसा नियंत्रण के अपने संगठन हैं।

संघर्ष परिवर्तन के पारंपरिक दृष्टिकोण का पहला गुण या विशेषता यह है कि इसे करने के लिए सिर्फ एक ही तरीका नहीं है; यह वास्तव में एक विशेषता है। दूसरा पारंपरिक संघर्ष परिवर्तन सामान्यतः समुदायों के सामाजिक भाईचारे और व्यवस्था और विशेषकर संघर्षरत पक्षों के सामाजिक संबंधों को पुनः स्थापित करता है जिसके लिए पुनःस्थापन न्याय (प्रतिफलात्मक न्याय के विपरीत) आधारित सामंजस्य आवष्यक है। प्रत्यर्पण और सजा न देना सामंजस्य के आधार हैं। इस तरह यह भविष्य को लेकर आगे विकसित होता है। यद्यपि अगला पारंपरिक दृष्टिकोण भविष्य आधारित है पर यह अतीत को भी साथ लेकर काम करता है। यह उपद्रवियों की स्वीकारोक्ति (जुर्म स्वीकारना) के लिए कहता है और क्षमा याचना से संबंधित प्रार्थना करता है। यह अधिकतर हिंसा की बजाय क्षतिपूर्ति के प्रावधान के साथ समाप्त होता है जो वस्तुओं के आदान–प्रदान या "रक्तधन" या दूसरे उपहार जैसे जानवरों के रूप में ले–देकर सम्पन्न होता है। ये सारे प्रयास प्रचलित कानून के तहत किए जाते हैं या धार्मिक अनुष्ठानों के द्वारा मापे जाते हैं। इससे भी अधिक पारंपरिक दृष्टिकोण में जीवन के विभिन्न आयाम जैसे – सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक आध्यात्मिक को अलग नहीं किया जाता; वे पूरी प्रक्रिया का एक हिस्सा होते हैं जो इसे धार्मिक बनाते हैं। अंत में, पारंपरिक संघर्ष परिवर्तन छोटे समुदायों "जैसे परिवारों में और परिवारों के बीच संघर्ष, पड़ोसियों के बीच संघर्ष समुदाय या गाँवों में संघर्ष के लिए सबसे अधिक उपर्युक्त है। इस तरह "हम–समूह" के सदस्यों के बीच संघर्ष को इन दृष्टिकोणों के द्वारा बताया जा सकता है। लेकिन "हमारा" और "उनका" बीच का संघर्ष जैसे – स्थानीय समुदायों और राज्य सरकारों के बीच का संघर्ष को व्यवस्थित करना मुष्किल है क्योंकि उनमें अलग तरह के कानून होते हैं जो या तो प्रचलित या औपचारिक हो सकते हैं।

पारंपरिक दृष्टिकोण की शक्तियाँ इस प्रकार हैं: वे उन स्थिति में उपयुक्त हैं जब राज्य या तो गौण या कमज़ोर हों, वे राज्य केंद्रित या आधारित नहीं होती हैं और जहाँ इनका प्रयोग होता है उन्हें समुदायों द्वारा वैध समझते हैं; वे प्रक्रिया आधारित होती हैं और समय का सबसे बड़ा कारक होता है क्योंकि संघर्ष परिवर्तन की प्रक्रिया लंबे समय तक चलने वाली हो सकती है। वे समावेषित और भागीदारीपूर्ण होती है; और अंततः इसमें मानसिक और आध्यात्मिक अरोग्य जैसी प्रक्रियाएँ आती हैं। इस प्रकार यह संघर्ष परिवर्तन के मनोसामाजिक और आध्यात्मिक पहलुओं पर केन्द्रित हैं। पारंपरिक दृष्टिकोण की कुछ कमज़ोरियाँ इस प्रकार हैं – यह लंबे समय तक हिंसा को रोक पाने में समर्थ नहीं होते, क्योंकि पारंपरिक समाज में हिंसा के पुनःघटन को "सामान्य" माना जाता है; वे सार्वभौमिक मानवाधिकारों और लोकतांत्रिक सिद्धांतों का उल्लंघन कर सकते हैं; वे कुछ सीमित समुदायों – "हम"

समूह के लिए ही उपयोगी हैं; इनमें पुरानी व्यवस्था या पूर्व स्थिति को बनाए रखने में विश्वास रखा जाता है और पारंपरिक शासकों द्वारा स्वार्थ की सिद्धि के लिए और अलाभान्वित लोगों के विरुद्ध दुर्व्यवहार करने में प्रयोग किया जाता है।

9.6.2 पष्चिमी दृष्टिकोण

इस भाग में, संरचनात्मक (ढाँचागत), नागरिक समाज, वार्तालाप, कदम–दर–कदम और प्रक्रियात्मक प्रस्ताव की चर्चा की गई है। संरचनात्मक दृष्टिकोण में, आकस्मिक दृष्टिकोण पर विकासात्मक दृष्टिकोण, राज्य सुधार दृष्टिकोण, और सर्वांगी व्यवस्थित दृष्टिकोण पर ध्यान केन्द्रित किया जाएगा।

9.6.2.1 संरचनात्मक दृष्टिकोण

संघर्ष और प्रायः हिंसा के अवसर बुनियादी कारणों के परिणामस्वरूप होते हैं। संघर्ष परिवर्तन का लक्ष्य संघर्ष के आधारिक कार्य या संरचनात्मक की स्थितियों या संघर्ष के कारणों पर काम करता है। संघर्ष की संरचनात्मक स्थितियों की दो आयाम होती हैंः

- यथेष्ठ/स्वायत्त आयामः यह संघर्षरत पक्षों के विरुद्ध वास्तविक अयोग्यता या भेदभाव जो या तो राजनीतिक सामाजिक, आर्थिक या सांस्कृतिक अथवा इनमें से किसी दो या उससे अधिक का मिश्रण हो सकता है।

- संबंधात्मक आयामः यह अनुमान, पूर्वाग्रह, रूढ़िबद्धधारणा और प्रभाव की बात करता है जो संघर्षरत पक्षों के वर्तमान और पूर्व के संप्रेषण के क्रियाकलापों के बीच उभरे परिणाम स्वरूप हैं। यह आयाम संघर्षरत पक्षों के अंतःजातीय हितों पर आधारित हैं जो इन्हीं के अन्दर पैदा होते हैं। संघर्ष परिवर्तन पर्याप्त तकनीक और तरीकों या साधनों के माध्यम के द्वारा इन हितों को बदलने की बात करता है। यह चीज संघर्ष परिवर्तन को दूसरे संघर्ष सिद्धांत से अलग करता है क्योंकि यह हितों की बात करता है।

  संरचनात्मक दृष्टिकोण में किसी भी मुद्दे पर व्यापक अध्ययन किया जाता है जिसे बाद में इन दृष्टिकोणों में वर्गीकृत किया जाता है। इसके बाद के भाग में दिए गए दृष्टिकोण दो संरचनात्मक आयामों का मिश्रण है।

9.6.2.1.1 आकस्मिक दृष्टिकोण

सषस्त्र संघर्ष में तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप से जुड़े आकस्मिक दृष्टिकोण का सिद्धांत रोनाल्ड फिषर और लोरालेइघ किएष्ले द्वारा प्रतिपादित किया गया है। वे मानते हैं कि वास्तविक या वैकल्पिक और संबंधात्मक या व्याख्यात्मक तत्व संघर्ष में लगातार एक–दूसरे का सामना करते हैं। आकस्मिक दृष्टिकोण का लक्ष्य सही समय पर किसी तीसरे पक्ष द्वारा संघर्ष में हस्तक्षेप करवाना है। फिषर और किएषले कहते हैं कि संघर्ष के संबंधात्मक आयाम पर काम करने के लिए सही समय, उसका पूर्व समझौता चरण होता है। लेकिन संघर्ष की स्थिति में शक्तिषाली विस्तार ताकतवर मध्यस्था के लिए विभिन्न आयामों का इस्तेमाल करना चाहिए। हालाँकि एक बार जब शांति समझौता हो जाता है तो संबंध बनाने के लिए पीछे आना चाहिए संबंधनात्मक। इस तरह आकस्मिक दृष्टिकोण में विभिन्न अभिकर्ता होते हैं जो तीसरे पक्ष में आते हैं, यह दृष्टिकोण उनमें एकजुटता बनाते हुए प्रभावषाली संघर्ष हस्तक्षेप के लिए आवष्यक हैं।

9.6.2.1.2 विकासात्मक दृष्टिकोण

शांति निर्माण के संरचनात्मक पहलुओं में विकास सहयोग या सहायता एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह संरचनात्मक संसाधनों के विकास के लिए आवष्यक आर्थिक सहायता देता है और लोगों को सषक्त बनाने और उनके विकास के लिए आर्थिक अवसर प्रदान करता है। इसमें लोगों का विकास और उनका सशक्तिकरण होता है। अगर विकास के लिए आए राहत/सहायता राषि को ठीक से बाँटा जाए और उचित रूप से लोगों तक पहुँचाया जाए तो यह सहभागिता और समेकित नागरिकता को विकसित करेगा जिसमें संघर्ष परिवर्तन की क्षमता में वृद्धि करता है।

9.6.2.1.3 राज्य सुधार दृष्टिकोण

यह दृष्टिकोण, युद्ध प्रभावित क्षेत्र के परिवर्तन के माध्यम के रूप में राज्य सुधार पर ज़ोर देता है। यह विशेषकर कमज़ोर राज्यों के लिए बहुत संकटपूर्ण तथा आवष्यक है। गुंटर बैचलर ने सन् 2004 में लिखी अपनी पुस्तक *कंफ्लिक्ट ट्रांसफॉर्मेषन थ्रू स्टेट रिफार्म* में राज्य सुधार और संघर्ष परिवर्तन के तीन नीतिगत दृष्टिकोणों की बात की है:

- भागीदारी कार्यनीति, जो सामाजिक और राजनीतिक स्थिरता बढ़ाएगी (लोकतांत्रिक व्यवस्था और सिविल सोसाइटी आदि को मज़बूत बनाना आदि)।
- प्रत्येक तरह की संस्थाओं का निर्माण और संगठनात्मक सुधार जो एक मज़बूत सामाजिक धागे में सबको बांधे रख सकती है (विकेन्द्रीकरण, संविधान, न्यायव्यवस्था आदि), और
- सुरक्षा की आवष्यकता और माँग (मानवाधिकार और मानव सुरक्षा)

बैचलर, शांति बनाए रखने के लिए लोकतंत्र की आवष्यकता पर बल देते हैं। न्याय या न्यायिक तंत्र एक ऐसी व्यवस्था संस्था है जो मज़बूत सामाजिक खाँचे को तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शांति बनाए रखने के लिए न्याय व्यवस्था एक पूर्वशर्त होती है। गुनर थेईसेन ने सन् 2004 में अपने एक लेख *सर्पोटिंग जस्टिस, को–एकजिस्टेंष और रिकॉनसिलिएषन आफ्टर आर्मड कंफ्लिक्ट* में संघर्ष परिवर्तन के लिए न्यायिक दृष्टिकोण की बात करते हैं खासकर उत्तरोत्तर सषस्त्र संघर्ष चरण में अन्याय का पता लगाने और न्यायव्यवस्था नियमित करने के लिए महत्वपूर्ण है। संघर्ष परिवर्तन के लिए, शांति सुधार और समझौता के लिए ज़मीनी पहल आवष्यक सहयोग देती है।

प्राधिकारणों न्यायधिकरणों सामुदायिक न्यायालय और राज्य सरकारों द्वारा गठित ईमानदार आयोग कुछ सकारात्मक पहल होती हैं लेकिन उनके भी कुछ अपने खतरे हैं अतः पहले के अन्याय से निपटने के लिए स्थानीय स्तर पर पहल और संस्थानों को प्रेरित किए जाने की आवष्यकता है ताकि पूर्व में किए गए अन्याय की क्षतिपूर्ति हो सके। अतीत से निपटना और सामंजस्य एक दीर्घ अवधि प्रक्रिया है लेकिन इसे पहले की त्रासदियों पर दबाव नहीं दिया जा सकता। अगर अतीत की ज्यादतियों अन्याय का अच्छी तरह से पता नहीं लगाया जाता, तो दोषी समझौता करने से इंकार कर सकता है।

9.6.2.1.4 व्यवस्थित दृष्टिकोण

संघर्ष परिवर्तन का व्यवस्थित दृष्टिकोण व्यवस्थित परिप्रेक्ष्य पर आधारित है जिसमें घटनाक्रम को नियंत्रित करने के दृष्टिकोण से चीजों को अलग और सूक्ष्मीकरण करने के प्रतिक्रिया स्वरूप उभरा था। इस बिखराव से "समूचे" के महत्वपूर्ण गुण का ह्रास हुआ यानी मुख्य विशेषताओं को हानि हुई। "समूचा" इसके हिस्सों के जोड़ से बड़ा है।

व्यवस्थित दृष्टिकोण सन् 1980 के दशक और सन् 1990 के दशक में संघर्ष समाधान के लिए लागू किया गया, संघर्ष विश्लेषण और संरचनात्मक हस्तक्षेप को प्रत्यात्मक करने के लिए भी इसका प्रयोग किया गया था। हालाँकि इनके अधिकतर प्रयोगों के कुछ तत्वों का ही प्रयोग हो पाया है और "व्यवस्थित" (हस्तक्षेप का संपूर्ण प्रयास) और "योजनाबद्ध" (हस्तक्षेप के व्यापक प्रयास) का अंतर धुँधला हो गया था। जॉन बर्टन सामान्य "व्यवस्थित सिद्धांत से प्रभावित हैं और इस बात पर ज़ोर देते हैं कि "प्रथम क्रम में सीखना" बताए हुए क्रम में सीखना" साथ ही "द्वितीय क्रम में सीखना" अर्थात वैसा ज्ञान जो मूल्यों, सिद्धांतों और इस क्रम की संरचना का सवाल करे दोनों ही दीर्घकालिक संरक्षित संघर्ष के लिए आवष्यक हैं।

सन् 1996 में मैकडोनाल्ड और लुईस डायमंड ने बहुमार्गीय कूटनीति की अवधारणा को प्रस्तुत किया था। उन्होंने एक ही समय में अलग–अलग माध्यमों से कार्य करने या उन पर चलने से दीर्घकालिक संघर्ष के परिवर्तन पर बल दिया। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि या तो माध्यमों की पूरकता को सुनिष्चित किया जाए या दूसरे रास्तों पर काम करते हुए, एक रास्ते पर समस्याओं को संतुलित करने के लिए नीति बनाई जाए।

सन् 2006 में, पीटर कोलमैन ने दीर्घकालिक संघर्ष को व्यापक तरीके से बताने संरक्षित करने के लिए और "गतिषील करने" के दृष्टिकोण की धारणा प्रस्तुत की। कोलमैन तर्क देते हैं कि "संघर्ष हस्तक्षेप का मुख्य ढाँचा पक्षों के संप्रेषण के तरीकों को बदलने का होना चाहिए न की किसी विशेष पक्ष को संपोषित करने के लिए प्रयास किए जाएँ जैसे कि शांति समझौता करना। इसका लक्ष्य किसी एक खास परिणाम जैसे शांति सहमति को लाना नहीं होना चाहिए। अन्तक्रिया के ढाँचे में इन संशोधनों से सामाजिक परिवर्तन स्थायीतत्व प्राप्त कर सकेगा।

प्रभावषाली तरीकों में ऐसे परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन को कायम रख सकते हैं। शांति लाने वाले हस्तक्षेप को मूल्यांकित करने और उस तक पहुँच बनाने के लिए, सर्वांगी संघर्ष परिवर्तन के लिए विशेषकर क्षमता विकसित करने के लिए संस्थानों द्वारा अनुसंधान किए गए हैं। ऐसी ही एक संस्था सी डी ए कोलेबोरिटिम लर्निंग प्रोजेक्ट है (पहले कोलैबोरेटिम डेवलेपमेंट एक्षन के नाम से जानी जाती थी) जिसने "षांति परियोजना के प्रतिबिंब" नामक परियोजना की शुरुआत की है। सी डी ए, संघर्ष परिवर्तन के लिए क्षमतावान उपयोगी नीतियुक्त की पहचान के लिए व्यवस्थित संघर्ष विश्लेषण का उपयोग करती है। ऑलिवर विल्स एट एल, बर्गोफ फाउंडेषन फॉर पीस सर्पोट में, सर्वांगी सोच की क्षमता की बात करते हैं। वे शांतिपूर्ण हस्तक्षेप को बनाने और लागू करने के व्यवस्थित सोच के प्रयोग के मुख्य तत्वों पर अधिक ध्यान केन्द्रित करते हैं जो नीचे दिए गए हैं इनके रूप इस प्रकार हैं:

व्यवस्थित संघर्ष विश्लेषण और निगरानी; व्यवस्थित हस्तक्षेप की नीतियुक्त योजना; मुख्य पणधारकों के साथ जुड़ाव; शांतिपूर्ण परिवर्तन के अभिकर्ताओं को एकजुट करना; वैकल्पिक शांतिपूर्ण भविष्य रचना करना है।

व्यवस्थित संघर्ष परिवर्तन की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

- सभी संघर्ष विश्लेषण को मानसिक मॉडल (प्रारूप) माना जाता है जो संघर्षरत पक्षों और तीसरे पक्षों के साथ सम्मिलित पक्षों की रुचि और संप्रेषण उनके हितों और अन्तक्रियाओं से जुड़ा होता है।
- व्यवस्थिति दृष्टिकोण संघर्ष को विश्लेषित करने के लिए बहुआयामी साधनों का उपयोग करता है और संघर्ष के आवष्यक हिस्से के रूप में विभिन्न व्याख्याओं और परिप्रेक्ष्यों को स्वीकृत करता है।

- जटिल सामाजिक परिवर्तन बहुत ही कम अनुरेखी होते हैं।
- शांति प्रक्रियाएँ विशेष रूप से कमियों और प्रतिरोध से सामना करने के लिए होती हैं। व्यवस्थित दृष्टिकोण शांति प्रक्रिया की निहित कमज़ोरियों को स्पष्ट करने की कोषिष करती है। यह इस बात की खोज़ करती है कि सही तरीके से किए गए काम के प्रति उत्पादक प्रभाव क्यों होते हैं।
- कोई भी रचनात्मक शांति पहल "समान मत" और "असमान मत" के साथ शांति के प्रयास के हित में किए जाने चाहिए।
- "आंतरिक संसाधनों" को एकजुट करने की समस्या समाधान का सबसे अच्छा तरीका है।
- संघर्षरत पक्षों और संघर्ष क्षेत्र के अन्य पणधारकों को अन्तक्रिया "सीखने का स्थान है।" इस स्थान के तीन मापदंड को ऑलिवर विल्स एट एलने "द सिस्टमिक एप्रोच टू कंफ्लिक्ट ट्रांसफोर्मेषन : कंसेप्ट एंड फील्ड ऑफ अपलीकेषन इन 2006" में बताया है। प्रक्रिया और संरचना के पुनर्रीक्षण और व्याख्यायित करने में बहुपक्षपातीकरण; पणधारकों के साथ रचनात्मक कठिन जुड़ाव और "बहुस्तरीय शांतिपूर्ण भविष्य से जुड़े" ये सभी मानदंड दीर्घ अवधि प्रक्रिया के संदर्भ में उपयोगी होते हैं।

निष्कर्षतः व्यवस्थित दृष्टिकोण के दो लाभ हैं। पहला, व्यवस्थित गतिषीलता के साधन, जो दीर्घकालिक संघर्ष के स्व–उत्पादन में नई दृष्टि देते हैं और दूसरा साधन समाधान के विश्लेषण और समस्या के विश्लेषण पर ध्यान देता है उस पर प्रकाश डालता है।

9.6.2.2 सिविल सोसाइटी दृष्टिकोण

विश्व बैंक ने सिविल सोसाइटी संगठन शब्द का प्रयोग किया है जो यह स्पष्ट करता है किः

"ग़ैर–सरकारी संगठन और ग़ैर लाभकारी संगठन जिनकी मौजूदगी सामान्य लोगों के जीवन में होनी चाहिए, जो अपने या दूसरों के हितों और मूल्यों को व्यक्त करते हैं, जो नीतिपरक, राजनीतिक, वैज्ञानिक, धार्मिक और लोकोपकारी सोच पर आधारित हैं। इसमें संस्थानों का व्यापक व्यवस्थित समूह शामिल हैः सामुदायिक समूह, ग़ैरसरकारी संगठन (एनजीओ'ज), मज़दूर संगठन, देषी समूह, परोपकारी संगठन, विश्वास आधारित संगठन, व्यावसायिक संघ और प्रतिष्ठान इत्यादि आते हैं। वर्तमान समय में, सिविल सोसाइटी महत्वपूर्ण हो गई है। विशेषकर, शांति निर्माण और संघर्ष परिवर्तन जहाँ संघर्ष के बाद की स्थितियों में उनके सकारात्मक सहयोग की आषा की जाती है।

नागरिक समाज संगठन प्रायः समकालीन समय में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किए हुए हैं वशिषकर शांति निर्माण और संघर्ष परिवर्तन की क्षेत्र में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है जहाँ पर इनसे आशा की जाती है कि ये संघर्ष के बाद के परिदृश्य में सकारात्मक सहयोग देगी।

मार्टिना फिषर ने सन् 2006 में, अपने लेख "सिविल सोसाइटी इन कंफ्लिक्ट ट्रांसफोर्मेषनः एम्बीवेलेंस, पोटेनषियल एंड चैलेन्जेस" में लिखती हैं और संघर्ष परिवर्तन के लिए सिविल सोसाइटी के दृष्टिकोण पर अपना दृष्टिकोण रखती हैं। उनके अनुसार, सिविल सोसाइटी समूह, शरणार्थी और बेघर लोगों के पुनर्निर्माण और पुनर्वास में सहायता कर सकती हैं। पुनर्निर्माण से संघर्ष परिवर्तन की ओर बढ़ने के लिए स्थानीय अभिकर्ताओं का सषक्तिकरण, शांति षिक्षा और समाज कार्य आदि का मिश्रण विकासात्मक दृष्टिकोण आर्थिक परिप्रेक्ष्यों सशक्तिकरण का सहयोग आवष्यक है। हालाँकि इस तरह के व्यापक कार्यों को प्रभावषाली बनाने के लिए उन्हें व्यवस्थित रूप से एक साथ मिलना आवष्यक होगा। सिविल सोसाइटी के अभिकर्ता शांति प्रयास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं लेकिन वे लड़ाई के लिए लोगों

को एकजुट करने में नकारात्मक भूमिका भी निभा सकते हैं। इससे भी अधिक, सिविल सोसाइटी की मौजूदगी केवल शांति निर्माण की प्रक्रिया में उनके योगदान को सुनिष्चित नहीं कर सकती है। इसके अलावा सिविल सोसाइटी संगठन, राज्य निर्माण की क्षतिपूर्ति नहीं कर सकते हैं।

9.6.2.3 संवाद संबंधी दृष्टिकोण

नोर्बर्ट रोपर्स, संघर्ष के साथ संरचनात्मक तौर पर निपटने के लिए वार्ता की भूमिका पर बल देते हैं। उच्च कूटनीति के मुकाबले ट्रैक द्वितीय कूटनीति, संप्रेषण, सीधी बातचीत और आपसी समझौते के लिए केन्द्रीय मंच प्रदान करते हैं। सन् 2004 में लिखे अपने लेख, फ्रॉम रिजोल्यूषन टु ट्रांसफोर्मेषनः दी रोल ऑफ डायलॉग प्रोजेक्ट, में उद्देष्य आधारित वार्ता परियोजना के चार व्यावहारिक रूपों को चित्रित करते हैं उनमें ये शामिल हैंः

- बुनियादी शांति निर्माण और अंतर्वैयक्तिक सामंजस्य के प्रयास के रूप में संवाद या वार्तालाप परियोजनाः यह स्थानीय स्तर से जुड़ा है और यह समान रूचि या एकसमान स्थिति वाले लोगों को एक साथ एक मंच पर लाता है। "इसका मुख्य तत्व व्यक्तिगत और संप्रेषण की रूकावटों को समाप्त करना है।"
- संवाद परियोजना, व्यक्ति की योग्यता निर्माण से जुड़ी हैः "ये परियोजनाएँ संघर्ष प्रबंधन और प्रषिक्षण का मिला जुला रूप है।" और यह पणधारकों (हिस्सेदारों) की एक–दूसरे से बात करने की दक्षता को बढ़ाता है। इस प्रकार के संवाद संप्रेषण दक्षता के लिए आदर्ष माहौल देते हैं।
- संवाद परियोजना संस्था निर्माण, नेटवर्किंग और व्यावहारिक परियोजना से जुड़ी हैंः यह संवाद विश्वास निर्माण की लंबी प्रक्रिया के सफल निष्कर्ष के बाद ही संभव है। कई मामलों में यह या तो अन्तरनैतिक निकाय भाग या सामंजस्य कराने वाले आयोग या ग़ैर सरकारी संगठन के नेटवर्क के संस्थानीकरण करने पर या किसी एक ग़ैर सरकारी संगठन (एन.जी.ओ.) के योग्यता निर्माण पर बल देता है।
- संवाद परियोजना पूर्व समझौते के रूप मेंः "ये परियोजनाएँ राजनीतिक नेतृत्व के संघर्ष के प्रबंधन को प्रभावित करती हैं। "पारंपरिक संघर्ष समापन और समस्या समाधान दृष्टिकोण का उद्देष्य, संघर्षरत पक्षों में प्रभावषाली समाधान के साथ गोपनीय कार्यषाला आयोजित कराती है। इसके लक्ष्य का उद्देष्य नए विचारों को पैदा करना है जो बाद में चलकर कार्यालयी सुलह को नया आधार दे सकें।"

अंत में, संवाद परियोजना सबसे अधिक संप्रेषण को तब आगे बढ़ाती है जब झगड़े की संस्कृति आधारित संवाद की स्थिति हो। इसे कोई भी व्यक्ति, समूह या संगठन संघर्ष से निपटने के लिए रचनात्मक प्रयोग कर सकता है।

9.6.2.4 कदम–दर–कदम दृष्टिकोण

संघर्ष, संघर्षरत लोगों के बीच संदेह और अविश्वास पैदा करता है अतः छोटा लेकिन समन्वित कदम, संघर्ष को युद्ध की स्थिति से समझौता तक लाने में मदद करता है। कदम–दर–कदम दृष्टिकोण अधिकतर विश्वास–निर्माण मापन के लिए है। सन् 2006 में जॉन पॉल लेडराक कंफ्लिक्ट रिजोल्यूषन के संपादित अंक में इस दृष्टिकोण की चर्चा करते हैं।

इस दृष्टिकोण की शक्ति साफ और आपसी समझ वाले प्रतीकों पर आधारित संवेग के निर्माण में सन्निहत हैं जो इस बात का सूचक है कि संघर्ष में शामिल लोग परिवर्तन की ओर बढ़ रहे हैं। हालाँकि

यह दृष्टिकोण कदम–दर–कदम है क्योंकि इसमें, शत्रुओं के विश्वास के पहचानने की आवष्यकता पर बल देता है। आगे इसका केन्द्र बिन्दु कम समय के लिए तुरंत और निकटदृष्टि वाला हो सकता है क्योंकि यह उन प्रतीकों को पहचानने की कोषिष करता है जो आसानी से दिख जाते हैं और जो महत्वपूर्ण होते हैं। यह सषस्त्र संघर्ष परिवर्तन करने के किसी प्रयास के विभिन्न पहलुओं को प्रकाषित करता हैः कुछ जगहों पर कुछ कठोर कदम उठाए जाने चाहिए।

9.6.2.5 प्रक्रियात्मक दृष्टिकोण

प्रक्रियात्मक दृष्टिकोण जॉन पॉल द्वारा प्रस्तुत किया गया जिसमें शांति के ऐसे प्रयासों को लक्ष्य बनाया गया जिसमें संघर्षरत दोनों पक्षों को स्पष्ट तरीके से यह बताया जाता है कि उनके लिए कौन–सा तरीका स्वीकार्य होगा। इसे "वार्ता के लिए वार्ता" के रूप में जाना जाता है। इस दृष्टिकोण का सकारात्मक पहलू यह है कि "यह उस परिवर्तन में सन्निहित होता है जो स्पष्ट और आपसी तौर पर स्वीकृत किए गए तरीकों से प्राप्त होता है।" लेकिन इसका नकारात्मक पहलू यह है कि यह संघर्ष के किसी पक्ष की ईमानदारी की गारंटी नहीं देता है।

9.6.3 पष्चिमी और ग़ैर–पष्चिमी दृष्टिकोणों का मिश्रण

पष्चिमी और ग़ैर पष्चिमी दोनों ही दृष्टिकोणों में इन विकासात्मक दृष्टिकोणों का योगदान है। इसका एक उदाहरण अहिंसात्मक दृष्टिकोण है।

9.6.3.1 अहिंसात्मक दृष्टिकोण

अहिंसात्मक दृष्टिकोण इस बात में विश्वास रखता है कि सामाजिक व्यवस्था क्रम के द्वारा ही शांति प्राप्त की जा सकती है और संघर्ष को अहिंसात्मक तरीके से ही व्यवस्थित किया जा सकता है। सन् 1918 में अलफ्रेड फ्राइड ने आकस्मिक वैष्विक शांतिवाद के सिद्धांत का निर्माण किया था। उनकी यह सोच "एक उद्देष्यपूर्ण शांति के जज़्बे" से प्रभावित थी। वे नई विश्व व्यवस्था या वैश्विक शासन का नया स्वरूप की स्थापना करना उनका लक्ष्य था। यहाँ संघर्ष समाप्त करना उनका प्रमुख उद्देष्य नहीं है लेकिन संघर्ष परिवर्तन, फ्रायड के शब्दों में, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को ऐसा रूप देना जो संघर्ष को ऐसे गुणों से भर देता है जो उन्हें हिंसा से मुक्त करता है और वैध तरीकों से प्रबंधन के द्वारा पूर्णतः अनुकूल बनाता है।

अहिंसात्मक दृष्टिकोण में अहिंसा एक मूल्य है और जिसमें अन्याय तथा हिंसा का विरोध किया जाता है। संदर्भ जो भी हो– व्यक्तिगत, संगठनात्मक या सामाजिक, राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय का विरोध किया जाता है और यह भी ध्यान रखा जाता है कि हिंसा दोबारा न हो। इस तरह अहिंसा सिर्फ एक विचारधारा नहीं बल्कि एक सिद्धांत है जो हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू में समाहित है। यह इस बात पर भी ज़ोर देता है कि कैसे कोई काम करता है और कैसे जीता है। गाँधी इस दृष्टिकोण के सबसे बड़े व्यवहारकर्त्ता थे और व्याख्याता थे। अहिंसात्मक दृष्टिकोण भागीदारीपूर्ण, अन्तर्क्रियात्मक और अनुभव आधारित होता है। ये सिद्धांत प्रवृत्ति के साथ–साथ व्यवहार पर भी काम करता है और दोनों के बीच के जुड़ाव को बताता है। इस प्रकार के पहल की प्रगति को और कमियों के द्वारा आँकी जाएगी और इस तरह इसमें समय रेखीय नहीं है।

जॉन गैल्टुंग का श्रेष्ठ (TRANSCEND) दृष्टिकोण भी अहिंसा पर आधारित है। उनका मानना है कि जब संघर्ष को गलत ढंग से हाथ में लिया जाता है तब बहुत अधिक हिंसा होती है। संघर्ष की जड़ों में प्रतिकूलता; प्रवृत्तियाँ और व्यवहार है जो बाद में एक त्रिकोण बनाती है। इस त्रिकोण के तीनों कोणे

एक–दूसरे को प्रेरित करते हैं। श्रेष्ठ (TRANSCEND) दृष्टिकोण शांतिपूर्ण संघर्ष परिवर्तन पर आधारित हैः क्रिया, षिक्षा और प्रषिक्षण, प्रसार और अनुसंधान। जॉन गैल्टुंग एवं अन्य सन् 2002 में लिखे अपने लेख "सर्चिंग फॉर पीसः दी रोड टू ट्रांससेन्ड" में के लक्ष्य उक्ति के रूप में बताते हैं कि शांति, शांतिपूर्ण तरीकों से प्रयोग किया जाना चाहिए।

वे आगे इसकी व्याख्या करते हैंः

शांति से हमारा अर्थ है संघर्ष को रचनात्मक रूप से बिना किसी हिंसा के परिवर्तित होने की क्षमता, और यह कभी समाप्त न होने वाली प्रक्रिया है।

संघर्ष परिवर्तन से हमारा आषय है ऐसी स्थिति पैदा करना जहाँ संघर्ष में शामिल पक्ष परस्पर सहमत हो जाएँ और उनके लिए यह स्वीकार्य और दीर्घ अवधि हो।

परिवर्तन से हमारा अर्थ, संघर्ष की ऊर्ज़ा को सभी बुनियादी आवष्यकता पूरी करने वाले नए और नायाब तरीके में बदलना है।

हिंसा के बिना हमारा अर्थ हैः निम्नलिखित प्रक्रियाओं से बचा जाए

- किसी भी प्रकार की धमकी या सीधी हिंसा जो किसी को नुकसान या तकलीफ पहुँचाती हो।
- किसी भी तरह के संरचनात्मक हिंसा का प्रयोग जो दोनों पक्षों को सैन्य विघटन करती हो।

उपर्युक्त तमाम – चीजें अहिंसा में नहीं आती हैं।

9.7 संघर्ष परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य

संघर्ष परिवर्तन के विभिन्न परिप्रेक्ष्य इस प्रकार हैंः राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, संबंधात्मक, मनोवैज्ञानिक, अल्प और दीर्घ अवधि है। इनमें से कुछ के बारे में दृष्टिकोण भाग में चर्चा की जा चुकी है। उदाहरण के लिए राजनीतिक और आर्थिक परिप्रेक्ष्य से जुड़े मुद्दे, संरचनात्मक दृष्टिकोण (जैसे राज्य सुधार और विकास दृष्टिकोण) में आते हैं। अतः इस भाग में स्पष्ट रूप से सभी परिप्रेक्ष्यों पर चर्चा की गई है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण इस बिन्दु में एक मामला है। संघर्ष परिवर्तन मानता है कि हिंसात्मक स्थिति से पैदा होने वाले मामलों और आघातों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए और जो व्यक्ति समूह या समुदाय को अभिघात करता है। इस तरह मानसिक आघात कार्य, संघर्ष परिवर्तन का अभिन्न हिस्सा है। दूसरा महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य सामाजिक–सांस्कृतिक है। समुदाय और समूह को संघर्ष की घटनाओं और परिणामों को प्रक्रिया में लाने की आवष्यकता है और समुदाय के संघर्ष के परिणाम की वे समुदाय के रूप में चुनकर उन घटनाओं को जिन्हें भूलना चाहते हैं या जिन्हें याद रखना चाहते हैं। प्रतीक, धार्मिक अनुष्ठान, उत्सव, कहानियाँ, प्रतिमान, अरोग्य व्यवहार जो धार्मिक या आध्यात्मिक हों, इस दिषा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। विशेषकर पारंपरिक समाज में।

इस तरह बताए गए परिप्रेक्ष्य समाज या समुदाय संस्कृति संघर्ष परिवर्तन में योगदान करती हैः

दूसरी ओर जॉन पॉल लेडराक सन् 2006 में अपने लेख "कंफ्लिक्ट ट्रॉसफोर्मेषन इन प्रोट्रेक्टीड इंटरनल कंफ्लिक्टः दी केस फोर ए काम्प्रीहेनसिव फ्रेमवर्क" अल्प दीर्घ अवधि परिप्रेक्ष्य की बात करते हैं। अल्पावधि परिप्रेक्ष्य में तात्कालिक संघर्ष की बात की गई है। जैसे युद्ध विराम जबकि दीर्घ अवधि परिप्रेक्ष्य में कार्यक्रम के बारे में है जैसे चुनावी और संवैधानिक सुधार। हालाँकि जॉन पॉल का विचार है कि ये परिप्रेक्ष्य प्रतिकूल नहीं है। वह एक व्यापक ढाँचे की राय देते हैं। जिसमें दोनों परिप्रेक्ष्य को वैधानिक विषय के रूप में समाविष्ट किया जा सकता है।

9.8 सारांश

संघर्ष संबंधों में रूकावट पैदा करता है। संघर्ष पर विजय प्राप्त करने का तरीका यह है कि एक–दूसरे से जुड़ें और इसके तरीकों को परिवर्तित करें। संघर्ष परिवर्तन, बदलाव के कई दृष्टिकोणों को बताता है। इन दृष्टिकोणों की पारंपरिक या संबंध स्थापित कर से लेकर पष्चिमी और दोनों के मिश्रणता तक का सफर है। ये व्यापक मुद्दों को छूती है जैसे संरचना, जिसमें राज्य सुधार, आर्थिक और व्यवस्था संबंधी पहलू आते हैं। सिविल सोसाइटी, संवाद परियोजना, और मार्गदर्षक का एक रूप में अहिंसा तथा दूसरे दृष्टिकोण इन मुद्दों को समेटते हैं जैसे लघु कार्य जैसे विश्वास निर्माण या एक संपूर्ण प्रक्रियात्मक ढाँचा। संघर्ष परिवर्तन अनेक परिप्रेक्ष्य को छूता है जिसे व्यक्ति या समुदाय संघर्ष के दौरान दो चार यानी आमने सामने होता है जैसे, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक संघर्ष परिवर्तन के विभिन्न दृष्टिकोण और परिप्रेक्ष्य के मुख्य पहलू संबंध निर्माण करना हैं।

9.9 बोध प्रष्न

1) संघर्ष समाधान से संघर्ष परिवर्तन की परिभाषिक शब्दावली करने में क्या मार्गदर्षन करता है?
2) संघर्ष परिवर्तन को परिभाषित करने और इसकी उत्पत्ति तथा इसके संदर्भ की परिभाषा करते हुए चर्चा कीजिए।
3) संघर्ष परिवर्तन के क्षेत्र में "संघर्ष" की संकल्पना कैसे बनी?
4) संघर्ष परिवर्तन में प्रयुक्त विभिन्न दृष्टिकोणों का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
5) संघर्ष परिवर्तन के संरचनात्मक दृष्टिकोण की चर्चा कीजिए। संघर्ष परिवर्तन का व्यवस्थित दृष्टिकोण की प्रमुख विशेषताओं का संक्षेप में विवरण दीजिए।
6) संघर्ष परिवर्तन के सिविल सोसाइटी दृष्टिकोण क्या हैं? इसकी कमियाँ और लाभ क्या हैं?
7) संघर्ष परिवर्तन के संप्रेषण दृष्टिकोण में किस प्रकार की वार्ता संभव है इसकी चर्चा कीजिए।
8) संघर्ष परिवर्तन के कदम–दर–कदम और प्रक्रियात्मक दृष्टिकोण का अंतर बताते हुए व्याख्या कीजिए।
9) संघर्ष परिवर्तन के अहिंसात्मक दृष्टिकोण की समीक्षा कीजिए।

9.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) क्रिस्टीन बिगडोन एंड बैनेडीकट कोर्फ, "दी रोल ऑफ डेवलेपमेंट एंड इन कंफ्लिक्ट ट्रांसफोरमेषनः फैसिलिटेटिंग इम्पावरमेंट प्रोसेस एंड कम्युनिटी बिल्डिंग", *बरगौफ हैंडबुक फॉर कंफ्लिक्ट ट्रॉसफोर्मेषन*, बरगौफ रिसर्च सेंटर फॉर कंस्ट्रेक्टिव कंफ्लिक्ट मैनेजमेंट, बर्लिन, 2004, http://www.berghof-handbook.net (अगस्त 2002 में पहली बार प्रकाषित)
2) डेनिला कोरप्पन एंड अल अन्य (संपा.), "ए सिस्टमेटिक एप्रोच टू कंफ्लिक्ट ट्रांसफोरमेषन – एक्सप्लोरिंग स्टेंगथन एंड लिमिटेषन्स", *बरगौफ हैंडबुक डॉयलॉग सीरिज,* सं. 6, बरगौफ रिसर्च सेंटर फॉर कंस्ट्रीस्टेव कंफ्लिक्ट मैनेजमेंट, बर्लिन, 2008, http://www.berghof-handbook.net
3) डिटर सेनघास, "दी सिविलाइजेषन ऑफ कंफ्लिक्ट : कंस्ट्रेटिव पेसिफिज्म एज ए गाइडिंग नोषन फॉर कंफ्लिक्ट ट्रांसफोरमेषन" *बरगौफ हैंडबुक फॉर कंफ्लिक्ट ट्रॉसफोर्मेषन*, सं. 6, बरगौफ रिसर्च सेंटर फॉर कंस्ट्रेक्टिव कंफ्लिक्ट मैनेजमेंट, बर्लिन, 2004, http://www.berghof-handbook.net (मार्च 2001 में पहली बार प्रकाषित)

4) गुनर थेईसेन, "सपोर्टिंग जस्टिस कोएकजिस्टेष और रिकॉनसिलिऐषन आफ्टर आर्मड कंफ्लिक्टः स्ट्रेटिजिस फॉर डीलिंग विद दी पॉस्ट", *बरगौफ हैंडबुक फॉर कंफ्लिक्ट ट्रॉसफॉर्मेषन*, बरगौफ रिसर्च सेंटर फॉर कंस्ट्रीस्टेव कंफ्लिक्ट मैनेजमेंट, बर्लिन, 2004, http://www.berghof-handbook.net (जुलाई 2002 में पहली बार प्रकाषित)

5) गुंटर बैचलर "कंफ्लिक्ट ट्रांसफोरमेषन यू स्टेट रिफार्म" *बरगौफ हैंडबुक फॉर कंफ्लिक्ट ट्रॉसफॉर्मेषन*, बरगौफ रिसर्च सेंटर फॉर कंस्ट्रीस्टेव कंफ्लिक्ट मैनेजमेंट, बर्लिन, 2004, http://www.berghof-handbook.net (अप्रैल 2001 में पहली बार प्रकाषित)

6) हुग माइल, " "कंफ्लिक्ट ट्रांसफोरमेषन : ए मल्टी–डायमेनषल टॉस्क" *बरगौफ हैंडबुक फॉर कंफ्लिक्ट ट्रॉसफॉर्मेषन*, बरगौफ रिसर्च सेंटर फॉर कंस्ट्रीस्टेव कंफ्लिक्ट मैनेजमेंट, बर्लिन, 2004, http://www.berghof-handbook.net (मार्च 2001 में पहली बार प्रकाषित)

7) जॉन गॉल्टुंग एवं अन्य, सर्चिंग फॉर पीसः दी रोड टू ट्रॉससेंड, प्लूटो प्रेस एंड ट्रॉससेंड, लंदन, 2002 (2000 में पहली बार प्रकाषित)

8) मार्टिना फिषर, "सिविल सोसाइटी इन कंफ्लिक्ट ट्रांसफोरमेषनः एम्बीवेलेंस, पोटेनषियल और चैलेन्जेस" *बरगौफ हैंडबुक फॉर कंफ्लिक्ट ट्रॉसफॉर्मेषन*, बरगौफ रिसर्च सेंटर फॉर कंस्ट्रीस्टेव कंफ्लिक्ट मैनेजमेंट, बर्लिन, 2006, http://www.berghof-handbook.net

9) मार्टिना फिषर और नौरबर्ट रोपर्स (संपा.), *"इंट्रोक्डषन" बरगौफ हैंडबुक फॉर कंफ्लिक्ट ट्रॉसफॉर्मेषन*, बरगौफ रिसर्च सेंटर फॉर कंस्ट्रीस्टेव कंफ्लिक्ट मैनेजमेंट, बर्लिन, 2004, http://www.berghof-handbook.net

10) नीनाड वूकोसावलजीविक, (2007), "ट्रैनिंग फॉर पीसबिल्डिंग एंड कंफ्लिक्ट ट्रांसफोरमेषनः एक्सपीरियंस ऑफ दी "सेंटर फॉर नॉनवायलेंट एक्षन इन दी वेस्टर्न बालकन्स" *बरगौफ हैंडबुक फॉर कंफ्लिक्ट ट्रॉसफॉर्मेषन*, बरगौफ रिसर्च सेंटर फॉर कंस्ट्रीस्टेव कंफ्लिक्ट मैनेजमेंट, बर्लिन, 2007, http://www.berghof-handbook.net

11) नॉरपर्ट रोबर्स, "फ्रॉम रिजोल्यूषन ट्रासंफॉर्मेषनः दी रोल ऑफ डायलॉग प्रोजेक्ट", *बरगौफ हैंडबुक फॉर कंफ्लिक्ट ट्रॉसफॉर्मेषन*, बरगौफ रिसर्च सेंटर फॉर कंस्ट्रीस्टेव कंफ्लिक्ट मैनेजमेंट, बर्लिन, 2004, http://www.berghof-handbook.net (मई 2003 में पहली बार प्रकाषित)

12) ओलिवर विल्स एवं अन्य, *दी सिस्टमिक एप्रोच टू कंफ्लिक्ट ट्रांसफोरमेषनः कंसेप्ट एंड फील्डस ऑफ एप्लीकेषन*, बरगौफ फाउंडेषन फॉर पीस स्पोर्ट (बीएफपीएस), बर्लिन, 2006, http://www.berghof-peacesupport.org/publications/systemic_conflict_ transformation _complete. pdf

13) वोल्कर बोएज "ट्रेडनिषनल एप्रोचस टू कंफ्लिक्ट ट्रांसफोरमेषन – पोंटिषियल एंड लिमिट्स" *बरगौफ हैंडबुक फॉर कंफ्लिक्ट ट्रॉसफॉर्मेषन*, बरगौफ रिसर्च सेंटर फॉर कंस्ट्रिस्टेव कंफ्लिक्ट मैनेजमेंट, बर्लिन, 2006, http://www.berghof-handbook.net